© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
International Journal of Scientific Research in Science, Engineering and Technology

सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

डॉ0 नन्दलाल मिश्रा
शोध निर्देशक,
एसोसिएट प्रोफेसर,
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, जिला–सतना (म0प्र0) भारत

चन्द्र प्रकाश मणि त्रिपाठी
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
कला संकाय
लोक शिक्षा एवं जनसंचार विभाग
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, जिला–सतना (म0प्र0) मारत

सारांश– प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक **''सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन''** है। जिसके अन्तर्गत लिंग के आधार पर शिक्षकों में शैक्षिक तनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना की गयी है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में 100 शिक्षकों जिसमें सामान्य विद्यालयों से 50 शिक्षक (25 पुरुष एवं 25 महिला) एवं दिव्यांग विद्यालयों से 50 शिक्षक (25 पुरुष एवं 25 महिला) अर्थात् कुल 100 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण के अध्ययन प्रपत्र का स्वनिर्माण किया गया है जिसमें कुल 52 प्रश्नों का निर्माण किया और विषय विशेषज्ञों की सलाह व विचार विमर्श के बाद उसमें से 44 कथनों को चुना गया और अपने अध्ययन प्रपत्र में शामिल किया। प्रत्येक कथन तीन बिन्दु 'सहमत', 'अनिश्चित' एवं असहमत पर निर्मित है। आँकड़ों के विश्लेषण के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर पाया गया अर्थात् दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण सामान्य विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

की–वर्ड – सामान्य, दिव्यांग विद्यालय, शैक्षिक तकनीकी, दृष्टिकोण।

प्रस्तावना– शिक्षा जीवन का अभिन्न अंग है। यह मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का महत्वपूर्ण साधन है। इसके द्वारा मानव की योग्यताओं का अधिकतम विकास सर्वाधिक सरल, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। यह एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा एक समूचा समाज अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करता है।

यह कथन पूर्णतः सत्य के समीप है कि आज का समाज तकनीकी पर आधारित है। वर्तमान युग में तकनीकी के प्रयोग ने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा का क्षेत्र उसके सीधे प्रभाव में है। उसके द्वारा विकसित अनेकों उपकरण सहायक सामग्री का काम देते हैं। अनेक षोधकर्ता अपने षोधों के द्वारा इस निश्कर्श पर पहुँचे हैं कि शैक्षिक तकनीकी के अन्तर्गत विकसित सहायक सामग्री की सहायता से शिक्षण कार्य करने से शिक्षण अधिक प्रभावी एवं बोधगम्य होता है।

वर्तमान युग तकनीकी का युग है। जीवन का षायद ही कोई पहलू होगा जो इसके प्रभाव से अछूता हो। शिक्षा में तकनीकी की विविध उपयोगिता को देखते हुए आज अधिकतर विद्यालय तकनीकी शिक्षा की ओर उन्मुख हो रहे हैं। चूँकि शिक्षा में तकनीकी के प्रयोग से शिक्षण की गुणवत्ता और विद्यार्थी की उपलब्धि स्तर में सुधार लाया जा सकता है।

शैक्षिक तकनीकी एक ऐसी प्रविधि का विज्ञान है जिसके द्वारा शिक्षा के उद्देष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इसका क्षेत्र केवल उद्देष्यों को निर्धारित करने तक ही सीमित नही हैं, अपितु यह उद्देष्यों को व्यावहारिक रूप में परिभाशित करने में सहायक है। शैक्षिक तकनीकी कोई शिक्षण पद्धति नही है वरन् यह एक ऐसा विज्ञान है जिसके आधार पर शिक्षा के विषिश्ट उद्देष्यों की अधिकतम प्राप्ति के लिये विभिन्न आव्यूह का निर्धारण तथा विकास किया जा सकता है।

शैक्षिक तकनीकी में मुख्य दो बिन्दु निहित हैं–

1. शिक्षण उद्देष्यों की प्राप्ति करना।
2. शिक्षण की क्रियाओं का यांत्रिकीकरण करना।

'शैक्षिक तकनीकी' शिक्षण उद्देष्यों को व्यावहारिक रूप देते हुए विभिन्न विधियों एवं प्रविधियों को जन्म देती है। शैक्षिक तकनीकी का दूसरा अर्थ है– शिक्षण की क्रियाओं का यांत्रिकरण करना। शिक्षण की प्रक्रिया में मषीनों का प्रयोग अधिक तेजी से बढ़ रहा है। यदि शिक्षा तकनीकी के आविर्भाव का इतिहास लिखा जाये तो व्यक्तियों की धारणा है कि इसके इतिहास का प्रारम्भ छापने की मशीनों मुद्रण से मानना चाहिये। जैसे–जैसे वैज्ञानिक युग में मषीनों का आविष्कार हुआ, वैसे–वैसे उनका प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में भी किया जाने लगा।

कुछ शिक्षाशास्त्री शिक्षा के उद्देदयों को व्यावहारिक रूप में लिखना और उनकी प्राप्ति हेतु दृष्य–श्रव्य उपकरणों का प्रयोग करने को ही 'शैक्षिक तकनीकी' कहते हैं, जबकि कुछ शिक्षाशास्त्री शिक्षण मषीनों तथा अभिक्रमित अनुदेशन को ही शैक्षिक तकनीकी स्वीकार करते हैं। अतः शैक्षिक तकनीकी की अनेक परिभाषाएँ दी गई हैं, जो निम्नवत् हैं–

'लेंथ' महोदय ने 'शैक्षिक तकनीकी' की व्यापक परिभाषा दी है। उनके अनुसार– ''अधिगम तथा अधिगम की परिस्थितियों के वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग जब शिक्षा तथा प्रशिक्षण के सुधारने तथा प्रभावषाली बनाने में किया जाता है, तब उसे शैक्षिक तकनीकी कहते हैं।''

राबर्ट एम0 गेने–''शिक्षा तकनीकी से तात्पर्य है कि व्यावहारिक ज्ञान भी सहायता से सुनियोजित प्रविधियों का विकास करना, जिससे विद्यालयों की शैक्षिक प्रणाली के परीक्षण तथा शिक्षा कार्य की व्यवस्था की जा सके।''

सम्पूर्ण विष्व में शिक्षा में तकनीकी के प्रयोग के महत्व को स्वीकार किया जा रहा है। अतः विद्यालय स्तर पर यह जानना समाचीन होगा कि भारतीय समाज विषेशकर विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रति जागृति का स्तर क्या है? यदि उनकी अभिरूचि में सकारात्मकता के दर्षन होते हैं तो समय के साथ–साथ भविश्य में शिक्षण प्रक्रिया में सभी स्तर पर इसका प्रयोग अधिक से अधिक किया जा सकेगा।

व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी अभिवृत्तियाँ हैं। विभिन्न वस्तुओं, व्यक्तियों, स्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति व्यक्ति विषेश के विचार एवं पूर्ण धारणाएँ ही उस व्यक्ति की अभिवृत्तियों का निर्धारण करती हैं। विषिश्ट परिस्थितियों में शिक्षण अधिगम का प्रभाव प्रत्येक शिक्षकों पर तदनुरूप पड़ता है, जिस कारण उनकी अभिवृत्ति सार्थक रूप से प्रभावित होगी।

यह आवश्यक होता है कि विद्यालय में अध्यापनरत् शिक्षकों की अभिवृत्ति को शैक्षिक तकनीकी के संदर्भ में षोध के द्वारा जाना जाये। यद्यपि पूर्व में अभिवृत्ति पर आधारित कुछ षोध कार्य किये गये हैं। कुछ षोध तकनीकी शिक्षा के पाठ्यक्रम, कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण व सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों के तकनीकी के संदर्भ मे किया गया है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों के तकनीकी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का सकारात्मक होना आवश्यक है जिससे उनके शिक्षण कार्यों से विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव पड़ सके। जिसका समर्थन पूर्व में किये गये शोध कार्यों के आधार पर किया जा सकता है। **गुप्ता, पाण्डेय एवं माथुर (2007)** ने अध्ययन में पाया कि शिक्षक प्रशिक्षण उद्देश्य एवं उपलब्धियॉ प्रसारण से 85 प्रतिशत शिक्षकों को विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर को बढ़ाने में मदद मिली है। **बुलेन्त कवास एवं अन्य (2009),** ने अध्ययन में इंगित किया कि विज्ञान शिक्षकों का सूचना एवं संचार तकनीकी के क्षेत्र में धनात्मक अभिवृत्ति है जबकि सूचना एवं संचार तकनीकी के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की अभिवृत्ति का लिंग से कोई लेना–देना नहीं है, फिर भी उम्र, घर पर कम्प्यूटर होना एवं अनुभव से शिक्षकों की अभिवृत्ति में खासा फर्क आता है। **जायसवाल एवं अन्य (2012). ने अध्ययन में पाया कि** सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के रूप मे उभरते हुए सबसे बड़े उपकरण का उपयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सहित शिक्षक शिक्षा में करना अत्यंत आवष्यक हो। **कौर (2012) ने अध्ययन में इंगित किया कि** शिक्षक शिक्षा की दिषा में गुणवत्ता लाने के लिये सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी, दूरवर्ती अधिगम तथा सेवाकालीन कार्यक्रमों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया है। **चौधरी एवं वर्मा (2012)** द्वारा अध्ययन में इंगित किया किया गया कि सूचना एवं संचार तकनीकी को परम्परागत प्रशिक्षण एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण के साथ में रखते हुए प्रशिक्षण की नई व्यवस्था लाना महत्वपूर्ण है। **राठौड़, अनामिका (2014)** ने अध्ययन में इंगित किया कि

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का प्रभाव पड़ता है। **खण्डेलवाल, मधु (2018)** ने निष्कर्ष में पाया कि सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के परिणाम आज शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक रूप से प्रभावशाली परिवर्तन होते है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी को अति–आवश्यक मानकर इसका विकास विभिन्न देशों में लगातार किया जा रहा है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण व अधिगम में आधुनिक विधियों व प्रौद्योगिकी का क्रमबद्ध प्रयोग करना है। यह शिक्षक की परम्परागत तथा उभरती हुई भूमिकाओं का मेल करवाती है। अतः वर्तमान शिक्षा के क्षेत्र में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग कर शिक्षा की प्रगति में अपेक्षित रूप से बदलाव किया जा सकता है।

उपर्युक्त शोध अध्ययन के आधार पर आवष्यक होता है कि विद्यालय में अध्यापनरत् शिक्षकों की अभिवृत्ति को शैक्षिक तकनीकी के संदर्भ में षोध के द्वारा जाना जाये। यद्यपि पूर्व में अभिवृत्ति पर आधारित कुछ षोध कार्य किये गये हैं। कुछ षोध तकनीकी शिक्षा के पाठ्यक्रम, कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण व सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों के तकनीकी के संदर्भ मे किया गया है।

समस्या कथन–

''सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन''।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर नहीं है।
2. सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर नहीं है।
3. सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप

में प्रयागराज जनपद के सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में 100 शिक्षकों जिसमें सामान्य विद्यालयों से 50 शिक्षक (25 पुरुष एवं 25 महिला) एवं दिव्यांग विद्यालयों से 50 शिक्षक (25 पुरुष एवं 25 महिला) अर्थात् कुल 100 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण के अध्ययन प्रपत्र का स्वनिर्माण किया गया है जिसमें कुल 52 प्रश्नों का निर्माण किया और विषय विशेषज्ञों की सलाह व विचार विमर्श के बाद उसमें से 44 कथनों को चुना गया और अपने अध्ययन प्रपत्र में शामिल किया। प्रत्येक कथन तीन बिन्दु 'सहमत', 'अनिश्चित' एवं असहमत पर निर्मित है। आँकड़ों के विश्लेषण के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या :

1. सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण की तुलना–

H_1 सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर है।

H_{01} सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 1

सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान का अन्तर	प्रमाणिक त्रुटि	टी–मान	सारणी मान
1.	सामान्य विद्यालय	50	51.24	13.70	14.46	2.96	4.89*	1.98 df=98
2.	दिव्यांग विद्यालय	50	65.70	15.87				

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या–

उपर्युक्त सारणी सं0 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का मध्यमान क्रमशः 51.24 एवं 65.70 तथा मानक विचलन क्रमशः 13.70 एवं 15.87 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 4.89 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा

शून्य परिकल्पना *सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर नही है,* निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण सामान्य विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पायी गयी अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 1

सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों के शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

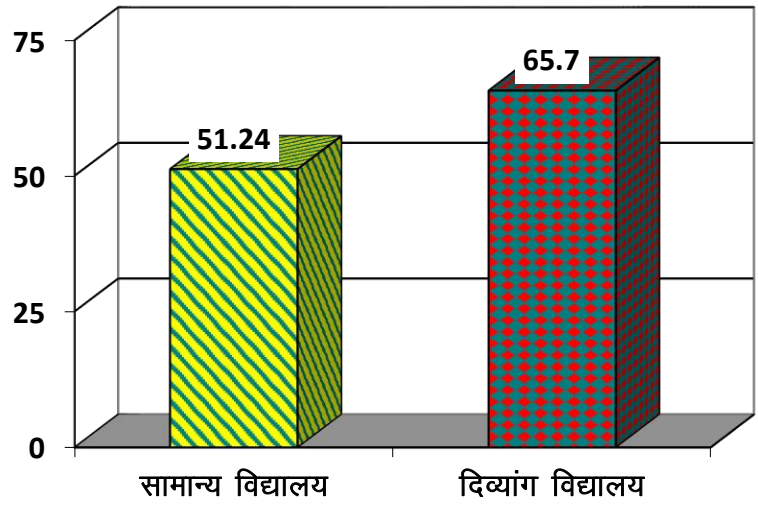

2. **सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण की तुलना–**

H_2 **सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर है।**

H_{02} **सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर नहीं है।**

सारणी सं0 2

सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान का अन्तर	प्रमाणिक त्रुटि	टी–मान	सारणी मान
1.	सामान्य विद्यालय	25	51.44	15.31	19.64	4.39	4.47*	2.01 df=48
2.	दिव्यांग विद्यालय	25	71.08	15.71				

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या– उपर्युक्त सारणी सं0 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का मध्यमान क्रमशः 51.44 एवं 71.08 तथा मानक विचलन क्रमशः 15. 31 एवं 15.71 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 4.47 है। मुक्तांश 48 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 2.01 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर नही है,* निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् पुरुष शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण सामान्य विद्यालयों में अध्यापनरत् पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पायी गयी अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 2

सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् पुरुष शिक्षकों के शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

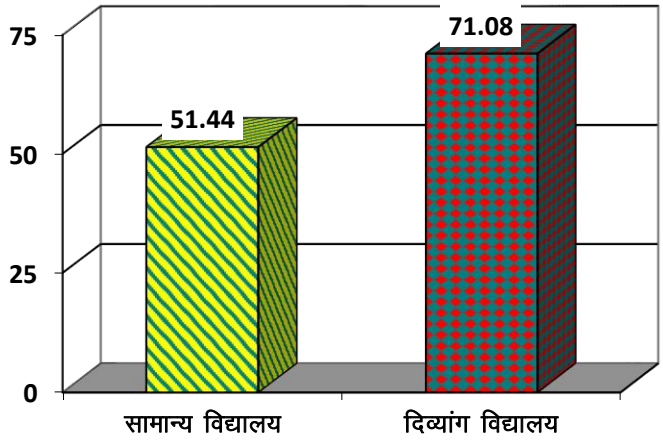

3. सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण की तुलना–

H_3 सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर है।

H_{03} सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 3

सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान का अन्तर	प्रमाणिक त्रुटि	टी–मान	सारणी मान
1.	सामान्य विद्यालय	25	51.04	12.21	9.28	3.78	2.46*	2.01 df=48
2.	दिव्यांग विद्यालय	25	60.32	14.42				

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या–

उपर्युक्त सारणी सं0 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण का मध्यमान क्रमशः 51.04एवं 60.32 तथा मानक विचलन क्रमशः 12. 21 एवं 14.42 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 2.46 है। मुक्तांश 48 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 2.01 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणी मान से अधिक है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राकल्पित किया गया था कि *सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर है* जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना *सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों के महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण में अन्तर नही है,* निरस्त की जाती है तथा परिणामतः कहा जा सकता है कि दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् महिला शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण सामान्य विद्यालयों में अध्यापनरत् महिला शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पायी गयी अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर पाया गया।

आरेख सं0 3

सामान्य एवं दिव्यांग विद्यालयों में अध्यापनरत् महिला शिक्षकों के शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण के मध्यमानों का आरेखीय चित्र

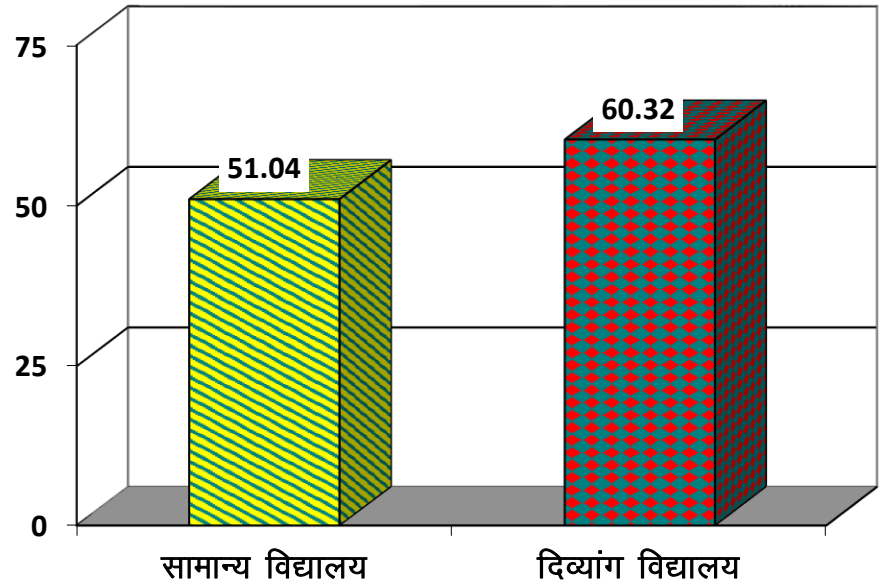

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. दिव्यांग विद्यालय में अध्यापनरत् शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण सामान्य विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की अपेक्षा उच्च है।
2. दिव्यांग विद्यालय में अध्यापनरत् पुरुष शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण सामान्य विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की अपेक्षा उच्च है।
3. दिव्यांग विद्यालय में अध्यापनरत् महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति दृष्टिकोण सामान्य विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की अपेक्षा उच्च है।

सुझाव

शिक्षा व्यवस्था में शैक्षिक तकनीकी की सुविधा उपलब्ध होने के बावजूद भी नियमित शिक्षा की अपेक्षा इसको स्वीकार करने वालों की संख्या काफी सीमित है। शिक्षा में तकनीकी के प्रयोग के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण जानने पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शिक्षा में शैक्षिक तकनीकी काफी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

सन्दर्भ सूची

[1]. खण्डेलवाल, मधु (2018). शिक्षा का बदलता स्वरूप (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विशेष संदर्भ में), इन्सपिरया– जर्नल ऑफ मॉर्डन मैनेजमेण्ट एण्ड इण्टरपेन्युरशिप, वॉल्यूम–08, नं0 01, पृ0 586–587

[2]. गुप्ता, पाण्डेय एवं माथुर (2007). सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी समर्पित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की समीक्षा, पी–एच.डी. शोध प्रबन्ध, रीवां : अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय।

[3]. राठौड़, अनामिका (2014). माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन', भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 33;2, जुलाई– दिसम्बर. 2014

[4]. Bulent CAVAS, Pinar CAVAS, Bahar, KARAOELAN & Tarik Kisla (April 2009), A Study on Science Teachers' Attitude Toward Information and Communication Technology in Education, TOJET (Turkish Online Journal of Educational Technology) ISSN-1303-6521, Vol. 8, Issue-2

[5]. Jaiswal, *Ekta and other (2012): Importanet of Computer in Distance education and professional Development of Teachers*, Souvenir, Intenational Seminar by the Learning Community on professional Development of Teachers, Nov 17-18.

[6]. Kaur, Dharminderjeet (2012): Innovative melhods and Quality Assurance in Teacher Education, Souvenir, International Seminar by The Learning Community, on professional Development of Teachers, Nov, 17-18.

[7]. Chaudhary, Jagdish and Verma, Rakesh kumar (2012): *ICT- Intigration in Teacher Education*, Sounir International, on professional Development of Teachers, Nov, 17-18